

सामाजिक मनोविज्ञान

(SOCIAL PSYCHOLOGY)

BAPSY-202 & MAPSY-104

Presented by

Dr. Seeta

Department of Psychology

Uttarakhand Open University, Haldwani

इकाई- सामाजिक व्यवहार को समझना - अनुकरण, सुझाव, सहानुभूति

**(Understanding of Social Behavior- Imitation, Suggestion and
Sympathy)**

Presented by:

Dr. Seeta,

Assistant Professor

Department of Psychology

Uttarakhand Open University, Haldwani

□ सामाजिक व्यवहार के नियम

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इन व्यवहारों को समझने के लिए समाज मनोवैज्ञानिकों ने कुछ नियमों का प्रतिपादन किया है। इन नियमों के आधार पर सामाजिक अन्तःक्रिया होती है। मैकडुगल (Mc. Dougal, 1919) के अनुसार इन नियमों को तीन भागों में बांटा जा सकता है-
- **अनुकरण (Imitation)** जब एक बच्चा या व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर वैसा ही व्यवहार करता है तो इस प्रक्रिया को अनुकरण की संज्ञा दी जाती है।
- **सुझाव (Suggestion)** सुझाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति अपना विचार या राय इस उम्मीद से दूसरे व्यक्ति के सामने रखता है कि दूसरा व्यक्ति उसे स्वीकार कर लें। इससे स्पष्ट है कि सुझाव में दो पक्ष होते हैं। एक सुझाव देने वाला एक दूसरा स्वीकार करने वाला। सुझाव में दोनों पक्ष क्रियाशील होते हैं।
- **सहानुभूति (Sympathy)** जब हम दूसरे के दुख से स्वयं दुखी होकर उसके प्रति दया का भाव अभिव्यक्त करते हैं तो इसे साधारणतः सहानुभूति की संज्ञा दी जाती है। व्यापक अर्थ में सहानुभूति से मतलब समान भावना के संचार या संप्रेषण से होता है।

□ अनुकरण (Imitation)- अर्थ एवं स्वरूप

- साधारण भाषा में अनुकरण का अर्थ नकल करना होता है। जब एक बच्चा या व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर वैसा ही व्यवहार करता है तो इस प्रक्रिया को अनुकरण की संज्ञा दी जाती है। नकल किए जाने वाले व्यवहार का मतलब नकल करने वाला व्यक्ति जानता भी न हो, तो भी वह नकल करता है।
- अनुकरण की प्रक्रिया सभी प्राणियों, पशु, पक्षियों के दैनिक जीवन में पाई जाती है। बंदरों में अनुकरण की योग्यताओं से तो हम भली भांति परिचित होंगे ही। यह देखा जाता है कि पशु, पक्षी भी अपने बच्चों को अनुकरण के लिये प्रेरित करते हैं।
- उदाहरण-
 - पिता को लिखते हुए देख कर बच्चा भी पेंसिल से रेखाएं खींचना प्रारम्भ कर देता है।
 - पिता को किसी मूर्ति के सामने झुकते हुए देखकर बच्चा भी सिर झुकाने लगता है।
 - पिता को चश्मा लगाते देख कर पुत्र भी मौका देखकर चश्मा चढ़ा लेता है।
 - सिनेमा में अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के पहनावा को देखकर युवक-युवतियां उनकी नकल करने लगती हैं।
 - किसी मधुर संगीत को सुनकर व्यक्ति स्वतः अपनी उंगलियों से तान या थाप देना प्रारम्भ कर देता है।

□अनुकरण की परिभाषाएं-

- **मैकडुगल के अनुसार:-** “एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के क्रियाकलाप और शरीर संचालन की नकल मात्र को अनुकरण कहते हैं।”
- **लिन्टन के अनुसार:-** “अनुकरण से तात्पर्य दूसरो के व्यवहारों की नकल करने से है, चाहे नकल करने वाले व्यक्ति को उस व्यवहार की जानकारी प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा या किसी दूसरे द्वारा सुनकर या अधिक प्रगतिशील समाज में पढ़कर मिली हो।”



इस प्रकार कह सकते हैं -

- अनुकरण एक क्रियात्मक प्रक्रिया है।
- अनुकरण में किसी अन्य व्यक्ति के कार्य या व्यवहार की पुनरावृत्ति होती है।
- अनुकरण यंत्रवत होता है।
- अनुकरण व्यक्ति द्वारा प्रयास करके किया जाता है।
- अनुकरण अधिगम की सरल तकनीक है।
- अनुकरण में तदात्मीकरण भी निहित हो सकता है।
- व्यवहार या शारीरिक क्रिया ऐसी हो जिसे अनुकरण करने वाला व्यक्ति महत्व देता हो।
- अनुकरण चेतन तथा अचेतन दो प्रकार से किया जाता है। जब अनुकरण जानबूझकर या चेतन ढंग से किया जाता है तो उसे नकल (Copy) कहते हैं। अनजाने में या अचेतन रूप से किया जाने वाला अनुकरण समेल निर्भरता (Matched dependent) कहलाता है।

□ अनुकरण के प्रकार

1. **सहानुभूति पूर्ण अनुकरण (Sympathetic imitation)**- किसी के दुख, पीड़ा या कष्ट को देखकर व्यक्ति वैसी ही अनुभूति करके उसके जैसा व्यवहार करता है। जैसे किसी को रोता देखकर स्वयं भी रोने लगना।
2. **विचार चालक अनुकरण (Ideo-motor imitation)**- किसी के व्यवहार या कार्य को देखकर कोई अन्य व्यक्ति आन्तरिक रूप से प्रेरित होकर स्वतः वैसा व्यवहार करने लगता है। जैसे- गीत या नृत्य से प्रभावित होकर सिर हिलाना या पैर का थिरकना। इसे स्वाभाविक अनुकरण भी कहते हैं।
3. **आरम्भिक अनुकरण (Rudimentary Imitation)**- ऐसे अनुकरण छोटे बच्चों में प्रायः दिखाई पड़ते हैं। जैसे-किसी के हँसने पर बच्चों का हँसना, जीभ निकालने पर जीभ निकालना या मुँह चिढ़ाने पर मुँह चिढ़ाना आदि इसके उदाहरण हैं। इसे निरर्थक अनुकरण भी कहते हैं।
4. **तार्किक अनुकरण (Rational Imitation)** - इसमें अनुकरणकर्ता किसी व्यक्ति के व्यवहार का सोच समझ कर पुनरोत्पादन करता है। जैसे-किसी प्रशिक्षु द्वारा अपने प्रशिक्षक के व्यवहार का अनुकरण करना।
5. **ऐच्छिक अनुकरण (Voluntary Imitation)**- यदि कोई बालक या व्यक्ति किसी अन्य का अनुकरण अपनी इच्छा से करता है तो उसे ऐच्छिक या उद्देश्यपूर्ण अनुकरण कहते हैं। इसे चेतन अनुकरण भी कहते हैं।
6. **अभिनयात्मक अनुकरण (Dramatic Imitation)**- किसी के व्यवहार का अभिनय करना अभिनयात्मक अनुकरण कहते हैं- जैसे-बच्चों द्वारा पिता का चश्मा पहनना या राजा का व्यवहार आदि करना।

□ अनुकरण के नियम (Laws of Imitation)

- टार्डे (1903) ने अनुकरण सम्बन्धी तीन नियमों का प्रतिपादन किया है:
- अनुकरण ऊपर से नीचे की ओर चलता है:- समाज के धनी या प्रतिष्ठित वर्ग या वरिष्ठों द्वारा जो कार्य या व्यवहार पहले किया जाता है, उसका अनुकरण बाद में निचले स्तर के लोगों या बच्चों द्वारा किया जाने लगता है।
- अनुकरण अन्दर से बाहर की ओर चलता है:- अनुकरण पहले अपने परिवार तथा पड़ोस के लोगों का किया जाता है। इसके बाद ही बाहर के समूहों के लोगों का अनुकरण किया जाता है।
- अनुकरण ज्यामितीय क्रम में चलता है:- इसका आशय यह है कि अनुकरण की गति काफी तीव्र होती है। अर्थात् अनुकरण की गति प्रारम्भ में जितनी होती है बाद में उससे ज्यादा और आगे चलकर और भी आधिक हो जाती है।

□ अनुकरण के सिद्धान्त (Theories of Imitation)

- **थार्नडाइक का सिद्धान्त (Thorndike's Theory)** - व्यक्ति प्रायः उन्हीं कार्यों या व्यवहारों का अनुकरण करना चाहता है जिनके द्वारा उसकी किसी आवश्यकता की पूर्ति होती है। अनुमोदित व्यवहारों का अनुकरण अधिक एवं तिरस्कृत व्यवहारों का अनुकरण कम होता है। प्रयत्न एवं त्रुटि (Trial & Error) सिद्धान्त के आधार पर करते हैं। अतः यदि बालक या व्यक्ति सीखने के लिए तत्पर एवं समुचित अभ्यास करता है तो अनुकरण सरल हो जाता है। यदि अनुकरण प्रभाव सुखद होगा तो उस व्यवहार की पुनरावृत्ति होगी। यदि परिणाम कष्टदायक होगा तो उसका दमन कर दिया जायेगा।
- **मिलर एवं डोलाई का सिद्धान्त (Miller and Dollard's theory)**- मिलर एवं डोलाई (1941) के अनुसार अनुकरणमूलक व्यवहार पर पुरस्कार तथा दण्ड का प्रभाव पड़ता है। पुरस्कृत व्यवहार का अनुकरण शीघ्रता से किया जाता है। दण्डित व्यवहार का अनुकरण नहीं किया जाता है। बच्चों द्वारा किए गये अनुकरण व्यवहार पुरस्कृत करने पर अनुकरण तीव्र गति से होने लगता है।



- **बन्दूरा का सिद्धान्त (Bandura's Theory)**- बन्दूरा (1963, 1966, 1969) के अनुसार बच्चे ऐसे व्यक्तियों या प्रतिमानों (Models) के व्यवहारों का अनुकरण करते हैं जो व्यवहार करते समय पुरस्कृत किए जाते हैं। जिन व्यवहारों के लिए वे दण्डित किए जाते हैं उन व्यवहारों का बच्चों द्वारा अनुकरण नहीं किया जाता है। बन्दूरा ने प्रयोग द्वारा यह बताया कि आक्रमकता का व्यवहार करने पर प्रतिमान (Model) को पुरस्कृत किया गया तब बच्चों ने भी आक्रमकता का अनुकरण किया। दण्डित करने पर आक्रमकता व्यवहार का अनुकरण नहीं किया गया।
- **बेगहॉट का सिद्धांत (Theory of Bagehot)**- इस सिद्धांत के अनुसार अनुकरण करने की प्रवृत्ति व्यक्ति में जन्म से ही मौजूद होती है। इसका मतलब यह हुआ कि इन्होंने अनुकरण को एक मूलप्रवृत्ति की श्रेणी में रखा है। इस तरह के अनुकरण के बारे में बेगहॉट का विचार बहुत कुछ मैकडुगल के विचार से मिलता जुलता है। क्योंकि मैकडुगल ने भी अनुकरण की प्रक्रिया को एक जन्मजात प्रक्रिया कहा है। इन्होंने यह भी कहा है कि बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक होती है। क्योंकि बच्चे मूलप्रवृत्ति द्वारा अधिक नियंत्रित होते हैं परन्तु वयस्कों में अनुकरण करने की प्रवृत्ति बच्चों की अपेक्षा कम होती है क्योंकि इनके मूल स्वभाव पर सामाजिक सीखने का प्रभाव अधिक होता है। इन्होंने यह भी कहा है कि जनजाति के व्यक्तियों में सभ्य जाति के व्यक्ति की अपेक्षा अनुकरण करने की क्षमता अधिक होती है। क्योंकि इन व्यक्तियों का व्यवहार मूलप्रवृत्ति द्वारा ही अधिक नियंत्रित होता है तथा साथ ही साथ इनके स्वभाव पर विकास का प्रभाव कम पाया जाता है।



- **टार्ड का सिद्धांत** (Theory of Tarde)- टार्ड ने भी अपने सिद्धांत में अनुकरण को एक मूलप्रवृत्ति ही कहा है। परन्तु साथ ही साथ इसमें अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के भी महत्व को कुछ हद तक उन्होंने स्वीकार किया है। उन्होंने अनुकरण को इतना प्रभावकारी बतलाया है कि इनके बिना समाज का अस्तित्व संभव नहीं है। उनके अनुसार सचमुच में पूरा समाज ही एक साकार अनुकरण है।

टार्ड के अनुसार किसी समाज का विकास उनके सदस्यों के बीच होने वाली अन्तःक्रियाओं पर निर्भर करता है। इन अन्तःक्रियाओं के मुख्य तीन रूप होते हैं - पुनरावृत्ति, विरोधी और अनुकूलन। इन तीनों तरह की प्रक्रियाओं में से प्रत्येक के तीन स्वरूप होते हैं- भौतिक स्वरूप, प्राणीशास्त्रीय स्वरूप तथा सामाजिक स्वरूप। टार्ड ने अनुकरण की व्याख्या करने के लिए पुनरावृत्ति के इन तीनों स्वरूपों की चर्चा को ही पर्याप्त माना है उनके अनुसार पुनरावृत्ति के तीन स्वरूप इस प्रकार होंगे - भौतिक पुनरावृत्ति, प्राणी शास्त्रीय पुनरावृत्ति तथा सामाजिक पुनरावृत्ति। हवा के माध्यम से हम प्रतिध्वनि सुनते हैं, यह भौतिक पुनरावृत्ति का उदाहरण है। अपने पुत्र या पुत्रियों में माता-पिता के गुणों एवं लक्षणों का दिखाई देना प्राणीशास्त्रीय पुनरावृत्ति का उदाहरण है। किसी एक व्यक्ति के व्यवहार एवं गुणों को दूसरे व्यक्ति द्वारा उसी रूप में दोहराया जाना सामाजिक पुनरावृत्ति का उदाहरण है।

टार्ड ने उन सामाजिक आर्थिक कारकों पर भी प्रकाश डाला है जिनसे प्रेरित होकर व्यक्ति नये-नये विचारों एवं रीति रिवाजों का अनुकरण करता है।

□ अनुकरण का महत्व

- **सामाजिक अधिगम एवं समायोजन (Social Learning and Adjustment)**- सामाजिक अधिगम के लिए बच्चे अपने मित्रों तथा वरिष्ठों के कार्यों का अनुकरण करते हैं।
- **व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality)** -अनुकरण के अध्ययन से व्यक्ति साहस एवं धैर्य की भावना विकसित करता है और सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों को ग्रहण करके व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन (Dynamic organization) का रूप प्रदान करता है।
- **आवश्यकता संतुष्टि (Need satisfaction)** -व्यक्ति अपनी जिन आवश्यकताओं की पूर्ति अपने स्वयं के प्रयासों से नहीं कर पाता है, उनकी अपूर्ति अन्य लोगों के व्यवहारों का अनुकरण करके करता है। अतः व्यक्ति के जीवन में अनुकरण का प्रभाव तथा महत्व का काफी व्यापक है।
- **सामाजिक प्रगति (Social Progress)**-बच्चे, किशोर या प्रौढ़ व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के पथ पर अग्रणी लोगों के कार्यक्रमों का अनुकरण करके स्वयं को भी प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा प्राप्त करते हैं। यह प्रेरणा एक समूह या राष्ट्र दूसरे समूह या राष्ट्र से भी ग्रहण करते हैं।
- **अनुरूपता (Conformity)**-बालक अपने परिवार समूह या समाज के रीति-रिवाजों, नियमों तथा आदर्शों का अनुकरण करते हैं। इससे उनके व्यवहार में एक-रूपता आती है। सामाजिक मानकों (Norms) के प्रति सम्मान बढ़ता है।

□ सुझाव या संसूचन (Suggestion) अर्थ एवं स्वरूप

- सुझाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति अपना विचार या राय इस उम्मीद से दूसरे व्यक्ति के सामने रखता है कि दूसरा व्यक्ति उसे स्वीकार कर लें। इससे स्पष्ट है कि सुझाव में दो पक्ष होते हैं। एक सुझाव देने वाला एक दूसरा स्वीकार करने वाला। सुझाव में दोनों पक्ष क्रियाशील होते हैं।
- **उदाहरण:-** माता-पिता अपने बच्चों को समय पर खाने, पढ़ने, सोने एवं स्कूल जाने का सुझाव देते हैं। शिक्षक अपने छात्रों को गृहकार्य करके लाने भी राय देते हैं।

परिभाषाएँ :-

- मैकडुगल के अनुसार:- "सुझाव संचार या संप्रेषण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप एक व्यक्ति द्वारा दी गयी राय उपयुक्त तार्किक आधार के बिना ही दूसरों के द्वारा विश्वास के साथ स्वीकार की जाती है।"
- किम्बल यंग के अनुसार: "सुझाव, शब्दों, चित्रों या ऐसे ही किसी अन्य माध्यम द्वारा किये गये प्रतीक संचार को एक ऐसा स्वरूप है जिसका उद्देश्य उस प्रतीक को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करना होता है।"
- थाउलेस के अनुसार:- "सुझाव शब्द का प्रयोग अब साधारणतः उस प्रक्रिया के लिए किया जाता है। जिसमें विचार, विशेष के प्रति मनोवृत्ति विवेकपूर्ण अनुमान्य को छोड़कर अन्य माध्यम से एक व्यक्ति द्वारा दूसरे तक संचारित की जाती है।"



उपर्युक्त परिभाषा के संयुक्त विश्लेषण करने पर हमें सुझाव प्रक्रिया के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं-

- सुझाव के दो महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं। एक सुझाव देने वाला दूसरा सुझाव स्वीकार करने वाला।
- दोनों ही पक्ष सक्रिय एवं सचेत होते हैं।
- सुझाव एक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है।
- सुझाव देने वाला व्यक्ति स्वीकार करने वाले व्यक्ति की तार्किक योग्यता एवं आलोचना करने की क्षमता को कमजोर कर देता है।
- संसूचन की सफलता पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है।
- सुझाव प्रायः किसी व्यक्ति के कार्य, घटना, तथा विचार से सम्बन्धित होता है।
- संसूचन/सुझाव का एक निश्चित उद्देश्य होता है।
- संसूचन सुझाव एक निष्क्रिय प्रक्रिया है। क्योंकि तार्किक शक्ति का उपयोग नहीं किया जाता है।

सुझाव का वर्गीकरण (Classification of suggestion)

भावात्मक संसूचन (Ide motor suggestion)-इसकी उत्पत्ति मानसिक भावनाओं से होती है। व्यक्ति के मन में कोई भाव आते ही यदि क्रिया भी प्रारम्भ हो जाय तो इसे भाव चालक संसूचन कहते हैं। यथा-रेडियो द्वारा संगीत सुनकर सिर को हिलाना भावचालक संसूचन है। यह क्रिया अचेतन स्तर पर भी होती है।

आत्म संसूचन (Auto Suggestion)-यदि कोई व्यक्ति आपने आप को स्वयं संसूचन देकर उसके अनुरूप कार्य करने लगता है तो उसे आत्म संसूचन कहते हैं। जैसे- किसी छात्र द्वारा स्वयं यह सोचना कि अध्ययन करना आवश्यक है अन्यथा परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाऊंगा।

प्रतिष्ठा संसूचन (Prestige suggestion)-यदि कोई बात कहते समय उसके साथ प्रतिष्ठित व्यक्तियों का नाम जोड़ दिया जाय तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है जैसे-गांधी जी ने कहा था-गरीबों की सेवा नारायण की सेवा है। सामान की बिक्री बढ़ाने के लिए फिल्मी कलाकारों के नाम का प्रयोग करना आदि प्रतिष्ठा संसूचन के उदाहरण हैं।

समूह संसूचन (Mass Suggestion)-यदि किसी व्यक्ति को सामूहिक सुझाव दिया जाय तो वह संभवतः शीघ्रता से सुझाव को मान लेगा। ऐसी परिस्थिति में वह समझ सकता है कि जो बात इतने लोग कह रहे हैं वह अवश्य ठीक होगी। प्रतिष्ठा संसूचन की तुलना में समूह संसूचन अधिक प्रभावशाली होता है। यथा-भीड़ एवं आन्दोलन में व्यक्ति अपने विवेक का उपयोग न करके तत्कालीन परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार करने लगता है।

विपरीत संसूचन (Contra Suggestion)-इसमें अभीष्ट व्यवहार या कार्य कराने के लिए सीधा सुझाव न देकर विपरीत ढंग से सुझाव दिया जाता है। यदि कोई बालक दूध पी रहा हो तो यह कहिए कि तुम दूध मत पियो नहीं तो अर्पिता पी जायेगी तो वह बालक तुरन्त दूध पी जायेगा।



प्रत्यक्ष संसूचन (Direct Suggestion)-प्रत्यक्ष संसूचन देते समय अभीष्ट वस्तु के बारे में संसूचन ग्रहणकर्ता के समक्ष जो भी बात कहनी है वह साथ-साथ कही जाती है। यथा- आप किसी कपड़े की दुकान पर जाइए। व्यापारी आपको नमस्कार करेगा और आपको एक से एक माडल के कपड़े दिखाना शुरू करता है और सभी कपड़ों की जमकर तारीफ भी करता है। यह प्रत्यक्ष संसूचन है।

अप्रत्यक्ष संसूचन (Indirect Suggestion)-अप्रत्यक्ष संसूचन देते समय अभीष्ट लक्ष्य को तुरन्त सामने नहीं लाया जाता है बल्कि नाम लिए लंबी चौड़ी भूमिका बनायी जाती है तथा तारीफ की जाती है। यथा-बाजार में डालडा वनस्पति की कमी हो जाने पर जाइए तो दुकानदार यह कहता मिलेगा कि साहब आप बड़ी-बड़ी कम्पनियों का चक्कर छोड़िये। देखिए मेरे पास एक नया माल आया है। मेरा निवेदन है कि एक बार इसे आजमाइए और गारंटी है कि दुबारा इसी की माँग करेंगे। ग्राहक उसकी बात से प्रभावित होकर नये सामान की खरीद कर लेगा।

सकारात्मक संसूचन (Positive Suggestion)-यदि सुझाव स्वीकारात्मक भाषा में व्यक्त किए जाते हैं तो उन्हें सकारात्मक संसूचन कहते हैं। यथा- किसी छात्र से यह कहना कि अधिक परिश्रम करो ताकि अच्छे अंक से उत्तीर्ण हो जाओ।

निषेधात्मक संसूचन (Negative suggestion)-यदि किसी सुझाव में किसी वस्तु का परित्याग करने या किसी कार्य को न करने का निर्देश दिया जाता है। तो उसे निषेधात्मक संसूचन कहते हैं। यथा-सिगरेट मत पिओ। इससे कैंसर हो सकता है या सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

सामाजिक जीवन में सुझाव का महत्व (Role of Suggestion in social Science)

सुझाव से सामाजिक एकता होती है-सामाजिक सुझाव में व्यक्ति अधिकतर व्यक्तियों के व्यवहारों के अनकल अपना व्यवहार करता है। इसका परिणाम यह होता है कि जब व्यक्ति अन्य लोगों के करीब आता है तो अपने आप ही एक तरह की सामाजिक एकता या समानता आती है। सामाजिक सुझाव हमें सामाजिक समूह से प्राप्त होते हैं जो व्यक्तियों के व्यवहारों को समाज की विशेष प्रथा, परम्परा, धर्म, आदर्श के अनुरूप बनाता है।

सामाजीकरण एवं संसूचन (Socialization and Suggestion)-व्यक्ति के समाजीकरण में संसूचन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में संसूचन द्वारा छोटे-छोटे बच्चों में वांछित विचारों एवं गणों का बीजारोपण किया जा सकता है। उनके परिवार में गलत संसूचन या सुझाव प्राप्त होने के कारण बालकों का व्यक्तित्व दोषपूर्ण हो जाता है। उनमें अपराधी प्रवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं।

सामाजिक नियंत्रण एवं परिवर्तन (Social Control and Social Change)-संसूचन द्वारा व्यक्ति के अवांछित व्यवहार को समाप्त या नियमित किया जा सकता है और सामाजिक परिवर्तन को उचित बल प्रदान किया जा सकता है। यदि संसूचन किसी विश्वसनीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा दिया जाय तो सामाजिक नियंत्रण एवं परिवर्तन को और भी सरल बनाया जा सकता है। यही कारण है कि समाज सुधारक बड़े-बड़े साधुसंत, नेतागण आदि अपने सुझाव द्वारा हमेशा लोगों के व्यवहारों को एक खास दिशा में नियमित करते हैं।



शैक्षिक एवं व्यावसायिक उपयोग (Educational and Vocational Use)-छोटे बच्चों को समुचित संसूचन प्रदान करके उनमें अध्ययन के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है। यदि शैक्षिक वातावरण यथोचित है तो बच्चे उससे प्रभावित होते हैं और उनमें शैक्षिक गुणों का विकास होता है। शिक्षकों द्वारा कही गई बातों का प्रभाव छात्रों पर अधिक पड़ता है। अतः शिक्षकों को उनके लिए क्रोधपूर्ण तथा आक्रोशपूर्ण शब्द जैसे नालायक, मूर्ख, उल्लू आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे सम्भव है कि बच्चे अपने आप को ऐसा ही समझने लगें।

राष्ट्रीय संकट में उपयोग (Use in National Crisis)-राष्ट्रीय संकट के समय नागरिकों में घबराहट हाने लगती है। संसूचन के द्वारा इनको दूर किया जा सकता है। बच्चों के मनोबल को उठाया जा सकता है।

सामाजिक प्रगति एवं संसूचन (Social Progress and Suggestion)-सामाजिक प्रगति को प्रतिष्ठा संसूचन द्वारा और भी अधिक गति प्रदान की जा सकती है। जैसे-नेहरू जी ने आजादी प्राप्त होने पर देश को प्रगति की ओर ले जाने में 'आराम हराम है' का नारा देकर देशवासियों को राष्ट्र की पुर्नसंरचना एवं प्रगति के लिए प्रेरित किया। जिसके फलस्वरूप भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की।

वाणिज्य एवं व्यापारिक उपयोग (Commercial & Trade Uses)-वाणिज्य एवं व्यापार में सफलता बहुत हद तक विज्ञापनों पर निर्भर करती है। विज्ञापनों के सहारे ही बहुत तरह के नये-नये सुझाव आम जनता को दिए जाते हैं। चूंकि इस तरह का सुझाव सीधे न देकर किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या लोकप्रिय अभिनेता या अभिनेत्री द्वारा दिलवाया जाता है। फलतः उसका प्रभाव जनता पर अधिक पड़ता है तथा जनता उसे तत्परता से स्वीकार कर लेती है। जिसका स्पष्ट परिणाम यह होता है कि उस वस्तु की माँग बढ़ जाती है।

□ सहानुभूति (Sympathy) अर्थ एवं स्वरूप

जब हम दूसरे के दुख से स्वयं दुखी होकर उसके प्रति दया का भाव अभिव्यक्त करते हैं तो इसे साधारणतः सहानुभूति की संज्ञा दी जाती है। व्यापक अर्थ में सहानुभूति से मतलब समान भावना के संचार या संप्रेषण से होता है। यह समान भाव सिर्फ दया या दुख का ही नहीं होता है बल्कि क्रोध, द्वेष, घृणा का भी हो सकता है। उदाहरण के लिए हम अपने मित्र के दुश्मन के प्रति क्रोध, घृणा तथा द्वेष व्यक्त कर मित्र के प्रति सहानुभूति प्रकट कर सकते हैं। एक बन्दर को संकट में फंसा देखकर अन्य सारे बन्दर इकट्ठा हो जाते हैं। एक कौवे के बीमार हो जाने पर बहुत सारे कौवे इकट्ठा हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सहानुभूति में एकत्र होते हैं।

परिभाषाएं-

- **मैकडुगल के अनुसार:-**“साधारण अर्थों में सहानुभूति एक प्रकार की कोमलता है। जो उस व्यक्ति के प्रति होती है, जिसके साथ सहानुभूति प्रकट की जाती है। दूसरे के दुख में दुखी होना या दूसरे किसी व्यक्ति या प्राणी में एक विशेष भावना या संवेग को देखकर अपने में भी उसी तरह विशेष भावना या संवेग को देखकर अपने में भी उसी तरह की भावना या संवेग का अनुभव करना ही सहानुभूति है।”
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार:-**“दूसरे के भावों एवं संवेगों के स्वाभाविक अभिव्यक्तपूर्ण चिन्हों को देखकर उसी प्रकार के भावों एवं संवेगों को अपने में अनुभव करने की प्रवृत्ति को सहानुभूति कहते हैं।”



संक्षेप में सहानुभूति का अभिप्रायः ऐसे मनोभाव से होता है जिसमें व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अनुरूप भावना या संदर्भ की अनुभूति करता है। उदाहरणतया एक स्त्री के रोने का विलाप करने पर दूसरी स्त्री के भी आंखों में आंसू आना है। यह उसकी शारीरिक अभिव्यक्ति से प्रमाणित होता है। इस प्रकार कई अच्छी विशेषताओं को व्यक्ति में सहानुभूति द्वारा विकसित किया जा सकता है।

- सहानुभूति में दो पक्ष होते हैं-एक पक्ष सहानुभूति दिखाने वाला तथा दूसरा पक्ष सहानुभूति प्राप्त करने वाला होता है।
- सहानुभूति में व्यक्ति के संवेगों एवं भाव की प्रधानता उसकी क्रियाओं एवं व्यवहारों से अधिक होती है।
- सहानुभूति में सहानुभूति प्रकट करने वाले व्यक्ति में ठीक उसी तरह का संवेग या भाव उत्पन्न होता है जिस तरह का भाव या संवेग सहानुभूति प्राप्त करने वाला व्यक्ति दिखलाता है।

सहानुभूति के प्रकार (Types of Sympathy)

सक्रिय सहानुभूति (Active Sympathy)-यदि किसी की दशा देखकर उसकी सहायता आगे बढ़ कर की जाती है या उसके साथ सहयोग किया जाता है तो उसे सक्रिय सहानुभूति कहते हैं। जैसे-किसी को रोता हुआ देखकर उसे चुप कराना, दुर्घटना में घायल व्यक्ति के कष्टों का अनुभव करते हुए कोई व्यक्ति अस्पताल तक ले जा कर उसकी चिकित्सा में मदद करना, किसी भिखारी की दयनीय दशा को देखकर एवं उसके शारीरिक कष्टों का अनुभव करते हुए उसे खाने के लिए भोजन तथा पहनने के लिए वस्त्र देना।

निष्क्रिय सहानुभूति (Passive Sympathy)-यदि किसी के साथ सहानुभूति अनुभव की जाय परन्तु कुछ किया न जाय तो इसे निष्क्रिय सहानुभूति कहते हैं। यह भावना प्रधान होती है। तात्पर्य यह है कि निष्क्रिय सहानुभूति भावना प्रधान, मौखिक तथा क्रिया रहित होती है। जैसे-कोई व्यक्ति भिखारी की दयनीय दशा देखकर कहता है कि उसे ऐसी दशा में कितनी तकलीफ होती होगी, परन्तु उसकी तकलीफ दूर करने का कोई उपाय नहीं करता है।

व्यक्तिगत सहानुभूति (Personal Sympathy)-किसी व्यक्ति या प्राणी विशेष को कष्ट में देख कर उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की जाती है तो उसे व्यक्तिगत सहानुभूति कहते हैं। जैसे-किसी कराह रहे व्यक्ति के प्रति हमदर्दी प्रकट करना।

सामूहिक सहानुभूति (Collective Sympathy)-लोगों में किसी-किसी समूह को कष्ट में देखकर उनके प्रति सहानुभूति की अनुभूति सामूहिक सहानुभूति कही जाती है। जैसे-शरणार्थियों के शिविर को देखकर पीड़ा अनुभव करना।

सहानुभूति उत्पन्न करने वाले कारक या परिस्थितियां:-

- आलपोर्ट ने प्रमुख ऐसे कारक जिनसे व्यक्ति में सहानुभूति उत्पन्न होती है।
- **भावनाओं का पूर्व अनुभव:-** व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की भावना से तभी सहानुभूति रख सकता है जब उसने स्वयं स्वतंत्र रूप से भावना का अनुभव किया हो। व्यक्ति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कुछ विशेष शारीरिक मुद्राओं जैसे - रोने, हंसने, चिल्लाने आदि द्वारा करता है। जैसे - जब हम किसी व्यक्ति के रोने तथा कराहने की आवाज सुनते हैं। तो समझ लेते हैं कि वह दुखी है।
- **वर्तमान परिस्थिति के स्वरूप का ज्ञान:-** सहानुभूति उत्पन्न करने के लिए यह भी आवश्यक है कि सहानुभूति प्राप्त करने वाले व्यक्ति की वर्तमान परिस्थिति के स्वरूप या प्रकृति का भी ज्ञान हो। जैसे- जब हम किसी औरत की रूलाई सुनते हैं तो हमें उसके प्रति उतनी सहानुभूति नहीं होती जितनी की जब हम यह जान लेते हैं कि उसके रोने का कारण उसके पति का देहान्त हो जाना है।
- **कल्पनाशक्ति:-** सहानुभूति का उत्पन्न होना व्यक्ति की कल्पना शक्ति पर निर्भर करता है। जिस व्यक्ति में जितनी ही अधिक कल्पना शक्ति होगी, उसमें दूसरों की भावना, संवेगों एवं परिस्थितियों के संबंध में कल्पना करने की तत्परता उतनी ही अधिक होगी।
- **परिस्थिति के प्रति अभिरुचि की समानता:-** सहानुभूति उत्पन्न करने के लिए यह भी जरूरी है जिस परिस्थिति में सहानुभूति उत्पन्न होनी है, उनमें दोनों पक्षों की समान अभिरुचि हो। जैसे-यदि कोई व्यक्ति का स्वरूप इस ढंग का है कि वह बच्चों से काफी घृणा करता है तो उसमें उस औरत के प्रति भी कोई सहानुभूति नहीं होगी, जिसके बच्चे की मृत्यु हो गयी है।

सहानुभूति का महत्व

- **सामाजिकता (Sociability)**-सहानुभूति की प्रवृत्ति व्यक्ति में सामाजिकता, मिलनसारिता, मैत्रीभाव, सामूहिकता, एकता तथा संगठन की भावना पैदा करती है। (मैकडूगल, 1914)।
- **मानवता (Humanity)**-सहानुभूति की भावना से व्यक्ति में मानवता बढ़ती है और वह दूसरे की सहायता तथा सेवा को महत्व देने लगता है। वह किसी को कष्ट पहचाना अनचित मानने लगता है। उसमें परिवार की भावना बढ़ती है। यही प्रवृत्ति लोगों को गरीब, यतीमों, विकलांगों की सेवा के लिए प्रेरित करती है।
- **आक्रामकता में कमी (Reduction in Aggression)**-सहानुभूति की भावना व्यक्ति में हिंसा, आक्रामकता तथा शोषण की प्रवृत्ति को नियंत्रित करती है। सहानुभूतिपूर्ण भावना से प्रभावित व्यक्ति दूसरों के दुख से उसी तरह दुखे अनुभव करता है जैसे कि वह स्वयं के दुख से कष्टित अनुभव करता है।
- **भेदभाव में कमी (Reduction in Discrimination)**-सहानुभूति सामाजिक एवं प्रजातीय भेदभाव कम करने में सहायक है। जिनेमें यह प्रवृत्ति प्रबल रूप में पाई जाती है वे जाति धर्म या भाषा के आधार पर लोगों में भेदभाव नहीं करते हैं।

□सारांश

संक्षेप में हम यही कह सकते हैं कि सुझाव, अनुकरण और सहानुभूति ये तीनों मूल प्रवृत्तियां ही सामाजीकरण का आधार हैं। सामाजीकरण की प्रक्रिया में सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति घनिष्ठ रूप से परस्पर जुड़कर दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अंतःक्रिया का कार्य सम्पादित करवाती हैं। सामाजिक जीवन में सुझाव व्यक्ति के व्यवहार को बदलने का महत्वपूर्ण तरीका है। इसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार को बनाया, बिगाड़ा तथा फिर बनाया जा सकता है। अनुकरण का भी सामाजीकरण के अतिरिक्त व्यक्तित्व विकास में बहुत महत्व है। इसी प्रकार सहानुभूति भी सामाजिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। चाहे मानव जगत हो या पशु जगत यदि इनमें अनुकरण तथा सहानुभूति की प्रक्रिया न हो और मनुष्य सुझाव की प्रक्रिया से अछूता रहे तो सामाजिक जीवन का आनंद समाप्त हो जायेगा और सम्पूर्ण जीवजगत के विकास की प्रक्रिया रूक जायेगी।